ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 61 बुलेटिन अवधिः 9–13 अगस्त, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 08 अगस्त, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल**				
	09–08–2017	**10–08–2017**	**11–08–2017**	**12–08–2017**	**13–08–2017**
वर्षा (मिमी0)	40	50	40	35	20
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	22	22	22	23
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	16	16	16	16	17
बादल आच्छादन	पूर्णतः बादल	पूर्णतः बादल	पूर्णतः बादल	पूर्णतः बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	95	95	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	65	65
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	010	004	008	008	008
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व

आगामी 9 से 13 अगस्त को मध्यम से भारी वर्षा होने तथा आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**1** से **7 अगस्त,** 2017 सुबह 8:30 तक) में घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 16.8 से 20.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 13.4 से 16.1 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- दलहनी एवं गन्ने की फसल में जल निकासी की उचित व्यवस्था करे।
- पिछले माह बोई गयी जेठी धान की फसल में निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल दें। वर्षा के पश्चात अथवा मिट्टी में उपयुक्त नमी होने पर चेतकी/जेठी धान में 1.25 किग्रा यूरिया प्रति नाली की दर से टाप ड्रेसिंग करें।

- मक्का एवं सोयाबीन की फसलों में आवश्यकता पड़ने पर निराई–गुड़ाई कर पौधों का विरलीकरण कर खरपतवारों को निकाल दें।
- रामदाने की फसल में पर्णजालक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर मिथाइल ओ डेमिटोन या डाई मिथोऐट 1 मिली/लीटर पानी या क्यूनोलफॉस 1.5 मिली/लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।
- मक्का में जहॉ तना बेधक का प्रकोप होता है। बुवाई के समय कार्बोफयूरॉन 3सी0जी0 का 33 किग्रा0/है0 की दर से मृदा मे डालें।
- गन्ने में तना बेधक कीट का प्रकोप होने पर सिंचाई के पूर्व या बाद 20–25 कि0ग्राम0/है0 क्लोरपाइरीफास दवा का प्रयोग करें।

उद्यान प्रबन्धः

- असिंचित मध्यम ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में अगस्त मध्य में सब्जी मटर की बुवाई हेतु मटर की अगेती किस्मों के बीज की व्यवस्था करें। ध्यान रहें की बीज उपचारित हो। साथ ही यदि अधिक वर्षा हो रही हो तो बीज की बुवाई 15 अगस्त के पश्चात ही करे। तथा समुद्र तल से 6000 से 8000 फीट की ऊँचाई वाले क्षेत्रो में बुवाई 25 अगस्त तक अवश्य ही पूरी कर लें।
- उॅचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रो में देर से बोई गई आलू की फसल में पक्षेती झुलसा रोग के नियत्रंण हेतु मेन्कोजेब 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 की दर से घोलकर बनाकर छिड़काव करे। रोग की उग्र अवस्था में मैनकोजेब 64 प्रतिशत् साइमोकजेनिल 8 प्रतिशत के मिश्रण को 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। इसके अतिरिक्त यदि पक्षेती झुलसा रोग पर नियंत्रण असम्भव हो रहा हो तो पौधों को जमीन की सतह पर काटकर खेत के बाहर कर दे या गढ्ढे में दबा दे। इस आलू की खुदाई पौधें के काटने के 10–15 दिन के पश्चात् करें।
- फ्रासबीन एवं लोबिया में सफेद सड़न की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर का छिड़काव करे।
- बंदगोभी, फूलगोभी, मूली, सब्जी राई, शलजम आदि बोई/प्रतिरोपित फसलों में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग कर जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें। यदि इन फसलों में कीट का प्रकोप हो रहा हो तो उपर्युक्त रसायन का छिड़काव खुले मौसम में करें।
- बैंगन एवं शिमला मिर्च की फसल में बरसात के दौरान जल निकास की समुचित व्यवस्था रखें तथा समय–समय पर फलों की तुड़ाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में असिंचित दशा में मूली एवं राई की बुवाई करें।
- मिर्च की पत्तियां काले पड़ने और फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सड़ने की समस्या से निदान हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।
- बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पॉच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पॉच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।
- अत्यधिक वर्षा के कारण फल पौधों के थालों में एकत्रित पानी के निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- सदाबहार फल पौधों जैसे आम, अमरूद, नींबू, पपीता, लीची आदि फल पौधों को लगायें।
- बागीचों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।
- शीतोष्ण फल पौधो के प्रवर्धन हेतु टी बडिंग अथवा चिप बडिंग की प्रक्रिया शुरू करे।
- मध्यम ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में सेब की देर से पकने वाली फल प्रजातियो के फलों को झड़ने से रोकने के लिए प्लेनोफिक्स नामक दवा का 10 पीपीएम छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- मुर्गी पालन के उत्पादन में अधिक से अधिक लाभ हेतु मुर्गियो का समय से टीकाकरण करवायें।
- यदि पशुओं को जुएं या चीचड़ लग गये हो तो उन पर सुमिथियोन 1 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके यूटरोटाने/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- पशुओं को बारिश का पानी नहीं पिलाना चाहिए।
- पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से करें।
- ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर